फ़िल्म समीक्षा

निर्माता **वॉटर एड इंडिया**

भाषा **अंग्रेज़ी (वेब ऑफ़ सक्सेस)**
हिन्दी (कामयाबी की लहर)

समय **29 मिनट**

कामयाबी की लहर

सुनीता ठाकुर

वॉटर एड इंडिया ने उड़ीसा और तमिलनाडु राज्यों में *इंटिग्रेटिड सेनिटेशन एण्ड हाइजीन फ़ॉर द पूअर* (ग़रीबों के लिए समग्र स्वच्छता व स्वास्थ्य अभियान) की शुरूआत की है। इस अभियान का ध्येय साफ़ पानी, स्वच्छता और स्वास्थ्य के प्रति ग्रामीणों में जागरूकता और उन प्रयासों को सशक्त बनाने के लिए सहायता देना है। इस अभियान को लेकर वॉटर एड ने दो वृत्तचित्र बनाए हैं।

पहला वृत्तचित्र उड़ीसा के आठ ज़िलों के छियालीस गांवों में चल रहे अभियान पर आधारित है। 38 प्रतिशत उड़िया आबादी दलितों की है और 57 प्रतिशत आबादी गंभीर संक्रामक रोगों और कुपोषण से ग्रस्त है। उड़ीसा की आबादी में 1/5 मृत्यु संक्रामक रोगों के कारण होती हैं। यहां चिकित्सा सुविधाओं का अभाव है। लोगों में साफ़ सफ़ाई, जीवन और खान-पान के स्वच्छ तरीकों तथा स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता की बहुत कमी है। खुले में शौच करना एक आम चलन है। प्रशासन की ओर से साफ़ पानी और पेयजल की व्यवस्था नहीं हैं।

अगर हम स्वास्थ्य की बात करते हैं तो हमें ज़मीनी स्तर पर लोगों के साथ उनके रहन-सहन और खान-पान के तौर तरीकों को भी समझने और सुधारने की पहल करनी होगी। साफ़ पेयजल का अभाव लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा असर डालता है। ऐसे में वर्षाजल संग्रहण और ज़मीनी पानी को दोबारा वापस लाने के तरीकों, कचरा प्रबंधन, फालतू पानी के समुचित उपयोग और पुनर्चक्रण तरीकों के बारे में जन जागरूकता फैलाना बहुत ज़रूरी है।

इन समस्याओं का खासतौर से महिलाओं के स्वास्थ्य और जीवन पर सीधा असर पड़ता है। शौच के मैदान आते-जाते समय लोग उनका मज़ाक उड़ाते हैं। बारिश, कीचड़ आदि में महिलाएं गिर जाती हैं। उन्हें साफ़ पानी की तलाश में बहुत मेहनत करनी पड़ती है। बीमार हो जाने पर उनकी देखभाल और इलाज भी ठीक से नहीं हो पाता।

इन्हीं सब बातों को लक्षित करते हुए *वॉटर एड इंडिया* द्वारा सहभागी गैर सरकारी संगठनों के साथ मिलकर इस अभियान की शुरूआत गयी है। अभियान के तहत अनेक स्वैच्छिक और ग्रामीण स्व-सहायता समूहों का निर्माण किया गया है। जो सहभागी संगठनों की मदद से सस्ते और रियायती शौचालय बनाने,

उनके रखरखाव और साफ़ सफ़ाई के बारे में जागरूकता और प्रेरणा देते हैं। महिलाओं के स्व-सहायता समूह बचत समूह चलाते हैं जिससे समूह की महिलाओं को संकट में मदद मिलती है। ये समूह इलाके में साफ़ पानी, पेयजल, सफ़ाई व्यवस्था, स्वच्छता और स्वास्थ्य के बारे में भी जागरूकता पैदा करते हैं। इन स्व-सहायता समूहों के साथ-साथ किशोरियों के समूह भी बनाए गए हैं जहां किशोरियों के साथ भी इन मुद्दों पर चर्चा व स्वास्थ्य की जानकारी दी जाती है।

दूसरी फ़िल्म तमिलनाडु के तिरुचिरापल्ली शहर की है। इसमें किफ़ायती शौचालय निर्माण के साथ-साथ सार्वजनिक शौचालयों के निर्माण और रख-रखाव के लिए उपभोक्ता शुल्क आधारित व्यवस्था का सफल उदाहरण पेश किया गया है। ये सार्वजनिक शौचालय नगरपालिका, स्वास्थ्य विभाग, सहभागी संगठनों के सहयोग से बनाए और चलाए जाते हैं। पचास पैसे का मामूली उपयोग शुल्क वसूल करने के कारण इन शौचालय के रखरखाव, साफ़-सफ़ाई में बहुत सहजता और कामयाबी हासिल हुई है। इन उपयोगिता शुल्क का हिसाब-किताब इलाके के स्व-सहायता समूहों के स्वैच्छिक कार्यकर्ताओं द्वारा बारी-बारी से किया जाता है। ये स्व-सहायता समूह किफ़ायती शौचालयों के निर्माण में लोगों को आर्थिक मदद भी प्रदान करते हैं। इस ऋण की अदायगी किश्तों में पैसे या शौचालय बनाने में श्रमदान, पदार्थ या वस्तु दान के रूप में की सकती है। उपयोग शुल्क के रूप में जमा पैसे को सार्वजनिक शौचालयों की देखभाल साफ़-सफ़ाई, बिजली-पानी व्यवस्था, मरम्मत आदि के लिए खर्च किया जाता है। पूरे धन का तिमाही ऑडिट किया जाता है। बच्चों की ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए बाल सुलभ शौचालय भी बनाए गए हैं, ताकि उन्हें खुले मैदानों में शौच करने की आदत से बचाया जा सके और उन्हें साफ़-सफ़ाई की अहमियत का अंदाज़ा लग सके।

इस अभियान में बेकार पानी के दोबारा उपयोग, कचरा प्रबंधन, भूजल की रक्षा और बढ़ोत्तरी, खुले कुंओं की रक्षा, सूखे कुंओं और हैंडपंपों को पुनर्जीवित करने, पेयजल स्रोत से नहाने-धोने के लिए अलग जगह बनाने, बेकार पानी को किचन गार्डन, खेती के लिए उपयोग करने, के बारे में जानकारी और जागरूकता पैदा की जाती है।

वॉटर एड का यह अभियान आज सफलता की सीढ़ियां चढ़ चुका है। तमिलनाडु के हर ज़िले में आज वॉटर-सेनिटेशन मिशन है। गांवों में साफ़-सफ़ाई को बढ़ावा देने के लिए पुरस्कार योजना शुरू की गई है। सबसे ज़्यादा साफ़ और स्वच्छ वरियापुर गांव को 25,000/- रु. का पहला पुरस्कार दिया गया है। तेराहल को 20,000 रु. का दूसरा पुरस्कार और लक्ष्मीपल्ली को 15,000/- रु. का तीसरा इनाम मिला है। तिरुचिरापल्ली के पन्द्रह गांवों को खुला शौच मुक्त एवं पूर्ण रूप से स्वच्छ क्षेत्र घोषित किया गया है।

इस अभियान की सबसे बड़ी खासियत इसकी सहभागिता और आपसी भागीदारी की सोच और योजनाएं हैं, जो कम से कम लागत में अधिक से अधिक लाभ पैदा करती हैं। इस कार्यक्रम की सफलता ने हमें यह सिखाया है कि केवल सरकार के भरोसे रहने से कुछ हासिल नहीं होगा, आपसी सहयोग और भागीदारी से तस्वीर का रुख ज़रूर बदला जा सकता है।

यह फ़िल्म बस्तियों में साफ़-सफ़ाई के साझे ज़मीनी प्रयासों के प्रति विश्वास पैदा करती है। इस प्रेरणादायक फ़िल्म के माध्यम से शहरों में चल रहे पानी व स्वच्छता अभियानों के लिए एक सकारात्मक नज़रिया विकसित करने में भी मदद मिलेगी। यह फ़िल्म इन मुद्दों से जुड़े व्यक्तियों, कार्यरत महिला व स्वयंसेवी संगठनों के लिए उपयोगी प्रशिक्षण सामग्री भी है।

सुनीता ठकुर *जागोरी की हिंसा हस्तक्षेप टीम से जुड़ी हैं।*